दादीजी के वरदानी बोल जीवन का आधार बने

ब्र.कु.आत्मप्रकाश

प्रेस में जो भी चीज़ें छपती थीं, उन्हें दिखाने मैं अक्सर दादी जी के पास जाता था । जब ज्ञानामृत पत्रिका लेकर जाते थे तो चित्र,लेख आदि सब बहुत ध्यान से देखती थीं और हमेशा पूछती थीं कि कितनी पत्रिकाएँ छपती हैं? उस समय संख्या एक लाख साठ हजार थी। जब मैं यह संख्या बताता था तो बहुत प्रसन्न होती थीं। फिर एक पत्रिका का खर्च और उस पर बचत का भी पूरा हिसाब पूछती थीं। इस प्रकार, साहित्य के संबंध में उनका अमूल्य मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिलता रहता था। कारोबार में उनकी दिलचस्पी देखकर हमारा उमंग द्विगुणित हो जाता था। बिन माँगे दादी जी सभी सुविधाएँ प्रदान करती थीं। हमारे पास पहले बाइंडिंग के लिए अलग से स्थान नहीं था। एक ही जगह छपाई, बाइंडिंग आदि होती थी। दादी जी एक बार मशीन का उद्घाटन करने आईं। जब दादी ने देखा कि जगह कम है और कारोबार बहुत विस्तृत, तो स्वयं ही बाइंडिंग के लिए एक पूरा हॉल प्रदान कर दिया। हमारे बिना कहे, हर सुविधा प्रदान करने में दादी जी हमेशा पूरी मददगार बनकर रहती थीं। दादी जी के वरदानी बोल आज जीवन का आधार बनकर इसे निर्विघ्न आगे बढ़ा रहे हैं और आगे भी बढ़ाते रहेंगे। दादी जी की गुणमूर्त छवि अव्यक्त होते भी साकार की भाँति दिल में समाई हुई है और प्रेरित, उत्साहित कर रही है।

उदारता के कारण दादी दुआओं से भरपूर थी

ब्र.कु. शीला

सन् 1987 में प्रथम बार गुवाहटी में मेले का आयोजन किया गया था। उस समय यहाँ हैंड्स थोड़े थे। दादी जी ने जानकी दादी जी को मेले का उद्घाटन करने भेजा था, उस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री को आना था। उस अवसर पर मैने दादीजी के विशाल हृदय एवं उनकी उदारता देखी। दादी जी ने खुद ही सभी ज़ोन की बहनों को प्रोत्साहित करके हमारे पास भेजकर सहयोग दिया। एक बहन को तो बस से उतार कर भी कहा कि तुम्हें हर हालत में जाना है, मदद करना है। सचमुच दादी ने दूर बैठकर मनसा शक्ति और सहयोग देकर मेले को सफल बनाया। लगभग सभी बड़ी बहनों तथा बृजमोहन भाई जी को भी भेजकर हमारे उमंग को बढ़ाया। कहने का तात्पर्य यह है कि दादी जी स्वयं भी सदा उमंग-उत्साह में रहतीं और हम सबमें उमंग-उत्साह ऐसा भरती थीं कि हम किसी भी कार्य को करने के लिए तैयार हो जाते थे। वे सदा कहती थीं, हिम्मत रख, बाबा बैठा है, दादी है ना! कोई भी चीज़ की आवश्यकता हो तो बताना। कुछ खाने का दिल हो तो भी बोलना, संकोच नहीं करना।

दादीजी के दिल में एक बाबा ही समाया हुआ था

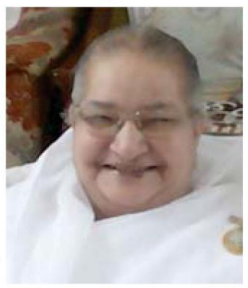

ब्र.कु. सत्यवती

दादी जी के साथ रहने का हमें बहुत चांस मिला,उनके साथ की अनेक यादें समाई हुई है। समय प्रति समय वे स्मृति में आती रहती हैं। दादी जी बहुत सरल और मधुर स्वभाव वाली थी। कोई भी बात को जल्दी स्पष्ट और हलका कर देती थी। जब वे तिनसुकिया पहली बार आई थीं, तब यहाँ सेवाकेंद्र का कोई स्थायी भवन नहीं था। तब दादी जी ने कहा कि तिनसुकिया मुख्य स्थान है, यहाँ पर कोई स्थायी भवन बनना चाहिए। इसी वरदानी बोल के प्रभाव से बहुत ही कम समय में भवन बनकर तैयार हो गया, जिसका उद्घाटन दादी जी के ही कर कमलों से हुआ। दादी जी के दिल में बाबा ही समाया था। वे कभी भी अपनी महिमा स्वीकार नहीं करती थी। दादी जी की मातृवत् पालना का क्या कहना, जब भी तिनसुकिया से चार-पाँच दिन ट्रेन में सफर कर के मधुबन पहुँचते थे तो रास्ते का सारा समाचार पूछती थी। ऐसा लगता था कि जैसे माँ, बच्चों से सारा हाल-चाल पूछ रही है और सचमुच तब रास्ते की सारी थकान दूर हो जाती थी।

दादीजी फरिश्ते समान दिखाई देती थीं

ब्र.कु. नीलम

बचपन में ही दादी जी की पालना का सौभाग्य मिला। दादी को देखकर मुझे ऐसा लगता था कि मैं भी अपना जीवन ऐसा बनाऊँ। दादी की ममता भरी दृष्टि बहुत ही शक्ति देती थी। दादी कहती थीं, नीलू बड़ी गम्भीर और सयानी है। दीदी-दादी ने मुझे दिल्ली, पांडव भवन में सेवा के लिए भेजा। फिर दादी ने मुझे मेहसाना सेवा के लिए भेजा। कुछ समय के बाद दादी ने कहा कि नीलू पाटन में ही रहेगी। मुझे हाँ जी का पाठ पक्का था। 2005 में मुझे कैंन्सर की शिकायत हो गई। दादी ने हमें मुम्बई ऑपरेशन के लिए भेजा। उस दौरान भी ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे दादी एकदम फरिश्ते रूप में हमारे सामने आकर खड़ी हो गई हों और मुझे दृष्टि दे रही हों, एकदम मेरे मुख से निकला, देखो दादी आई।

दादीजी दूरांदेशी बुद्धि से सम्पन्न थीं

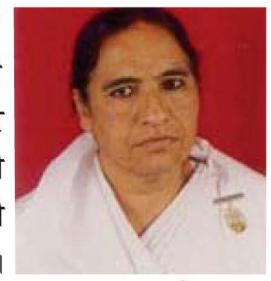

ब्र.कु.शशि

दादी जी साकार ब्रह्मा बाबा के विशेषताओं की प्रतिमूर्ति थीं। दादी जी के हृदय में विश्व की सभी आत्माओं के प्रति असीम आत्मिक स्नेह था। दादी, यज्ञ के सभी भाई-बहनों पर विश्वास रखती थीं। उनके इस विश्वास तथा प्यार ने यज्ञ के सभी भाई-बहनों में भी अपनी-अपनी विशेषताओं की एक अद्भुत एवं कलात्मक रूप में जागृति पैदा कर दी। उनके अद्भुत आत्मिक प्यार, विशाल हृदय एवं दूरांदेशी बुद्धि का ही सबूत है कि यज्ञ आज अपनी विशाल चरम सीमा पर पहुँच गया है। दादी जी आध्यात्मिक ज्ञान एवं योग के साथ यज्ञ के सभी भाई-बहनों के लिये खेलकूद व मनोरंजन कार्यक्रम के प्रति भी बहुत रूचि रखती थीं। यज्ञ के सभी भाई-बहनों को उनकी अपनी-अपनी योग्यता अनुसार व्यस्त भी रखती और खुश भी रखती थीं। दादी यज्ञ के शासन कार्यों को अधिकार रूप में नहीं बल्कि परिवार के रूप में बहुत प्यार से स्वयं करके सभी को सिखाती थीं और सभी का उत्साह उन सभी कार्यों को करने के लिए बनाये रखती थीं। जटिल समस्याओं में वे सभी की राय और सभी को विश्वास में लेकर ही कार्य करती थीं।

सबको स्नेह व रिगार्ड देकर आगे बढ़ाया

ब्र.कु. सुंदरी

दादी जी ने तीन बार मालवीय नगर की इस भूमि को अपनी दृष्टि से निहाल किया। जब पहली बार नया मकान लिया था तो वह तीन सौ गज का, दो कमरों का छोटा सा सेंटर था। तब दादीजी आए थे विदेश यात्रा से लौटते समय। इस सेवास्थान को उन्होने अंदर व बाहर से अपनी वरदानी और मीठी दृष्टि दी और बेहद शुभभावनाएं, शुभकामनाएं व उमंग-उत्साह दिलाया। दादी ने हाथ पकड़कर कहा, ''जहाँ बाबा है, वहाँ सब कार्य सफल होंगे।'' उनमें सचमुच एक माँ का रूप था। चेहरे पर सदा मुस्कुराहट और मुख पर सदा बाबा। दूसरी बार दादी तब आई जब मुझे हार्ट अटैक आया। दादी ने आकर हमें गले लगाया, हाल पूछा और बहुत-बहुत प्यार दिया। हर आत्मा के प्रति अतुलनीय स्नेह व सहयोग था दादी में। तीसरी बार दादीजी का दो दिन रहना हुआ कालकाजी में दस दिन के लिए बड़ा मेला लगाने के अवसर पर। दादी जी के आने से भण्डारे भरपूर हो गये। हम दादी को समय भी नहीं दे पाए क्योंकि मेले की सेवाओं में व्यस्त थे, पर हमारी निर्माणचित्त दादी ने बहुत खुशी से बेहद की दुआओं से सहयोग दिया। उसके बाद जो भी सेवाओं के विस्तार हुए और जो विशेष आत्माएं सहयोगी बनीं, वो सब कराने वाला बाबा और हमारी मीठी दादी थीं। दादी ने सिखाया कि बाबा को आगे रखकर हर कार्य में सफल होते जाएं और सदा सबको स्नेह और रिगार्ड देकर आगे बढ़ाते जाएं।

सेवा में अथक व कर्मयोगी थीं दादीजी

ब्र.कु. गीता

14 वर्षों तक मुझे दादी जी के साथ यज्ञ कारोबार संभालने में सहयोग देने का मौका मिला। मैं देखती थी कि दादी जी कितनी प्रकार की सेवाएं करती थीं। अभी-अभी मेहमानों से मिलना, अभी-अभी यज्ञ कारोबार, ख़रीदारी आदि के कामकाज को देखना, फिर सेन्टरों से आये हुए भाई-बहनों को सौगात देना, फिर प्रोग्राम में प्रवचन देना, बी.के. भाई-बहनों को क्लास कराना आदि-आदि। पता नहीं, कैसे दादी जी सब कुछ एक्यूरेट करती थीं। जिस समय जिस कार्य में होती वहाँ पूरा फोकस रहती, कार्य पूरा हुआ, वहाँ से डिटैच हो जाती और नये कार्य में इन्वोल्व हो जातीं। यह उनकी आन्तरिक साधना थी, देह से न्यारा होकर आत्मभिमानी स्थिति का अभ्यास और एक परमात्मा पिता के प्रति सम्पूर्ण समर्पणमयता की तपस्या का ही परिणाम था।

गजब का आत्मविश्वास था दादीजी में

ब्र.कु.निरंजना

एक बार पांडव भवन में ग्रेजुएट कुमारियों की भट्ठी चल रही थी। हरिद्वार से कुछ संन्यासी आश्रम की मुलाकात के लिए आये थे। उन्होंने हमारी क्लास को देखा, फिर आकर के दादी जी से बातचीत करते हुए कहा -'आपने इन भोली-भाली बच्चियों को भरमाकर रख लिया है। इन्होंने कहाँ संसार देखा है?' दादी जी ने कहा -' देखो, मैं आपके सामने बैठी हूँ। आप वहाँ से किसी भी कुमारी को बुलाओ, आपको जो प्रश्न पूछना है, पूछ सकते हैं।' दो-तीन बहनों को बुलाया गया, उसमें मैं भी थी। दादी जी के सामने ही एक सन्यासी इंटरव्यू ले रहा था। अनेक प्रश्न पूछ रहा था। दादी जी केवल मधुर स्मृति के साथ देख रही थी। सभी प्रश्नों के संतोषजनक जवाब सुनकर वे संन्यासी खुश हो गए। दादी जी के प्रति सम्मान से उनका सिर झुक गया।